وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا

(बनी इस्राईल-16)

तजल्लियात-ए-इलाहिया

(ख़ुदाई चमत्कारें)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	:	तजल्लियात-ए-इलाहिया
Name of book	:	Tajalliyat-e-Ilahiyya
लेखक	:	हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	:	Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक	:	डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	:	Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाइपिंग, सैटिंग	:	नादिया परवेज़ा
Typing Setting	:	Nadiya Perveza
संस्करण तथा वर्ष	:	प्रथम संस्करण (हिन्दी) जुलाई 2018 ई०
Edition. Year	:	1st Edition (Hindi) July 2018
संख्या, Quantity	:	1000
प्रकाशक	:	नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	:	Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	:	फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	:	Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रिव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत
हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़
नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

तजल्लियात-ए-इलाहिया

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह पुस्तक मार्च 1906ई. की रचना है। परन्तु पहली बार 1922 ई. में प्रकाशित हुई। इसमें हुज़ूर के इल्हाम - "चमक दिखलाऊंगा तुम को उस निशां की पंज बार" के अनुसार भविष्य में पांच भंयकर भूकम्पों की भविष्यवाणी की गई है। इस पुस्तक में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने (प्रकोपी) निशानियों के उतरने की हिकमत भी वर्णन की है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसको स्वीकार नहीं किया लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली हमलों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।

पांच भूकम्पों के आने के बारे में ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी जिसके शब्द ये हैं

चमक दिखलाऊंगा तुम को इस निशां की पंज बार

ख़ुदा की इस वह्यी का मतलब यह है कि ख़ुदा फ़रमाता है कि केवल इस ख़ाकसार की सच्चाई पर गवाही देने के लिए और केवल इस उद्देश्य से ताकि लोग समझ सकें कि मैं उसकी ओर से हूं पांच भयंकर भूकम्प एक दूसरे के बाद कुछ-कुछ अन्तराल से आएंगे ताकि वे मेरी सच्चाई की गवाही दें और उनमें से प्रत्येक में ऐसी चमक होगी कि उस के देखने से ख़ुदा याद आ जाएगा और हृदयों पर उनका एक भयानक प्रभाव पड़ेगा और वे अपनी शक्ति, तीव्रता और क्षति पहुंचाने में असाधारण होंगे जिन के देखने से मनुष्य के होश जाते रहेंगे। यह सब ख़ुदा का स्वाभिमान करेगा, क्यों कि लोगों ने समय को नहीं पहचाना। और ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं गुप्त था अब मैं स्वयं को प्रकट करूंगा और मैं अपनी चमकार दिखाऊंगा तथा अपने बन्दों को छुटकारा दूंगा उसी प्रकार जिस प्रकार फ़िरऔन

के हाथ से मूसा नबी और उसकी जमाअत को छुटकारा दिया गया। और ये चमत्कार उसी प्रकार प्रकट होंगे जिस प्रकार मूसा ने फ़िरऔन के सामने दिखलाए। और ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं सच्चे और झूठे में अन्तर करके दिखलाऊंगा तथा मैं उसे सहायता दूंगा जो मेरी ओर से है और मैं उसका विरोधी हो जाऊंगा जो उसका विरोधी है।★

अत: हे सुनने वालो! तुम सब स्मरण रखो कि यदि ये भविष्यवाणी केवल साधारण तौर पर प्रकटन में आईं तो समझ लो कि मैं ख़ुदा की ओर से नहीं हूं परन्तु यदि इस भविष्यवाणी ने अपने पूर्ण होने के समय संसार में एक तहलका मचा दिया और घबराहट की तीव्रता से पागल सा बना दिया तथा अधिकतर स्थानों में इमारतों और प्राणों को क्षति पहुंचाई तो तुम उस ख़ुदा से डरो जिसने मेरे लिए यह सब कुछ कर दिखाया। वह ख़ुदा जिसके क़ब्ज़े में कण-कण है उस से मनुष्य कहां भाग सकता है। वह फ़रमाता है कि मैं चोरों की तरह छुप कर आऊंगा। अर्थात् किसी ज्योतिषी या मुल्हम या स्वप्न दृष्टा को उस समय की ख़बर नहीं दी जाएगी सिवाए इतनी ख़बर के जो उसने अपने मसीह मौऊद को दे दी या भविष्य में इस पर कुछ अधिक करे। इन निशानों के बाद संसार में एक परिवर्तन पैदा होगा और अधिकतर हृदय ख़ुदा की ओर खींचे जाएंगे और प्राय: नेक दिलों पर संसार का प्रेम ठण्डा हो जाएगा और मध्य से लापरवाही के पर्दे उठा दिए जाएंगे और उन्हें वास्तविक इस्लाम का शर्बत पिलाया जाएगा जैसा

★**हाशिया :-** थोड़ी ऊंघ की अवस्था में ख़ुदा तआला ने एक काग़ज़ पर लिखा हुआ मुझे यह दिखाया تلك ايات الكتاب المبين अर्थात् पवित्र क़ुर्आन की सच्चाई पर में ये निशान होंगे। इसी से

कि ख़ुदा तआला स्वयं फ़रमाता है -

چو دور خسروی آغاز کردند
مسلماں را مسلماں باز کردند

दौरे खुसरवी से अभिप्राय इस ख़ाकसार का दावत-काल है। परन्तु यहां संसार की बादशाहत अभिप्राय नहीं अपितु आकाशीय बादशाहत अभिप्राय है जो मुझ को दी गई। इस इल्हाम का ख़ुलासा अर्थ यह है कि जब दौरे खुसरवी अर्थात् मसीही काल जो ख़ुदा के नज़दीक आकाशीय बादशाहत कहलाती है छठे हज़ार के अन्त में आरंभ हुआ जैसा कि ख़ुदा के पवित्र नबियों ने भविष्यवाणी की थी तो इसका यह प्रभाव हुआ कि वे जो केवल बाह्य तौर पर मुसलामन थे वास्तविक मुसलमान बनने लगे, जैसा कि अब तक चार लाख के लगभग बन चुके हैं, और मेरे लिए यह कृतज्ञ होने का स्थान है कि मेरे हाथ पर चार लाख लोगों ने अपने पापों, गुनाहों तथा शिर्क से तौब: की और हिन्दुओं तथा अंग्रेज़ों की भी एक जमाअत इस्लाम से सम्मानित हुई। अत: कल के दिन ही एक हिन्दू मेरे हाथ पर इस्लाम से सम्मानित हुआ जिसका नाम मुहम्मद इक़बाल रखा गया और मैं कल के दिन कई बार मैं इस ख़ुदा के इल्हाम को पढ़ रहा कि अचानक मेरी रूह में यह इबारत फूंकी गई जो पहले इल्हाम के बाद में है -

مقام او مبیں از راہ تحقیر
بدورانش رسولاں ناز کردند

ऐसा ही ख़ुदा तआला ने इस वह्यी में जो लिखी जाती है मेरे हाथ पर इस्लाम धर्म के फैलाने की खुशख़बरी दी जैसा कि उसने फ़रमाया-

يَا قَمَرُ يَا شَمْسُ اَنْتَ مِنِّى وَ اَنَا مِنْكَ - अर्थात् हे चन्द्रमा और हे सूर्य! तू मुझ से है और मैं तुझ से हूं। ख़ुदा की इस वह्यी में ख़ुदा तआला ने एक बार मुझे चन्द्रमा ठहराया और अपना नाम सूर्य रखा। इस से मतलब यह है कि जिस प्रकार चन्द्रमा का प्रकाश सूर्य से लाभ प्राप्त और लाभान्वित होता है इसी प्रकार मेरा प्रकाश ख़ुदा तआला से लाभ प्राप्त और लाभान्वित है। फिर दूसरी बार ख़ुदा तआला ने अपना नाम चन्द्रमा रखा और मुझे सूर्य कहकर पुकारा इस से मतलब यह है कि वह जलाली (प्रतापी) प्रकाश मेरे माध्यम से प्रकट करेगा। वह गुप्त था अब मेरे हाथ से प्रकट करेगा। वह गुप्त था अब मेरे हाथ से प्रकट हो जाएगा और उसकी चमक से संसार अनभिज्ञ था परन्तु अब मेरे माध्यम से उसकी जलाली चमक संसार में चारों ओर फैल जाएगी। और जिस प्रकार तुम बिजली को देखते हो कि एक ओर से प्रकशित हो कर एक पल में आकाश की सम्पूर्ण सतह को प्रकाशित कर देती है। इसी प्रकार इस युग में भी होगा। ख़ुदा तआला मुझे सम्बोधित करके फ़रमाता है कि तेरे लिए मैं पृथ्वी पर उतरा और तेरे लिए मेरा नाम चमका तथा मैंने तुझे समस्त संसार के लिए चुन लिया। और फ़रमाया है-

قال ربّك انّه نازلٌ من السماء مایر ضیك

अर्थात् तेरा ख़ुदा कहता है कि आकाश से ऐसे चमत्कार उतरेंगे जिन से तू राज़ी हो जाएगा। अत: उनमें से इस देश में एक ताऊन और दो भयानक भूकम्प तो आ चुके जिन की मैंने ख़ुदा से इल्हाम पाकर पहले से खबर दी थी। परन्तु अब ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि पांच भूकमप और आएंगे और संसार उनकी असाधारण चमक

को देखेगा और उन पर सिद्ध किया जाएगा कि ये ख़ुदा के निशान हैं जो उस के बन्दे मसीह मौऊद के लिए प्रकट हुए। अफ़सोस इस युग के नुजूमी और ज्योतिषी इन भविष्यवाणियों में मेरा ऐसा ही मुकाबला करते हैं जैसा कि जादूगरों ने मूसा नबी का मुकाबला किया था और कुछ नासमझ मुल्हम जो अंधकार के गढ़े में पड़े हुए हैं वे बलअम की तरह मेरे मुक़ाबले के लिए सच को छोड़ते और गुमराही को सहायता देते हैं परन्तु ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं सब को शर्मिन्दा करूंगा और किसी अन्य को यह प्रतिष्ठा कदापि नहीं दूंगा। इन सब के लिए अब समय है कि अपने नुजूम या इल्हाम से मेरा मुकाबला करें और यदि किसी आक्रमण को उठा रखें तो वे असफल हैं। ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं उन सब को पराजित करूंगा और मैं उस का शत्रु बन जाऊंगा जो तेरा शत्रु है और वह फ़रमाता है कि अपने रहस्यों की अभिव्यक्ति के लिए मैंने तुझे ही मनोनीत किया है तथा पृथ्वी और आकाश तेरे साथ है जैसा कि मेरे साथ है और तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मेरा अर्श। इसी के अनुसार पवित्र क़ुर्आन में यह आयत है जो ख़ुदा के रसूलों को ग़ैरों से अलग करती है और वह यह है-

لَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۝ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ

(अलजिन्न- 27,28)

अर्थात् खुला-खुला ग़ैब केवल मनोनीत रसूल को प्रदान किया जाता है ग़ैर (अन्य) को उसमें हिस्सा नहीं। इसलिए हमारी जमाअत को चाहिए कि ठोकर न खाएं और उन ग़ैरों को जो मेरे मुक़ाबले पर हैं तथा मेरी बैअत करने वालों में सम्मिलित नहीं हैं कुछ भी चीज़ न समझें अन्यथा ख़ुदा के प्रकोप के नीचे आएंगे। प्रत्येक अनर्थवादी जो

भविष्यवाणी करता है ख़ुदा ऐसे लोगों से सच्चे ईमानदारों को आज़माता है कि क्या वे ग़ैर को वह महत्व और सम्मान देते है जो ख़ुदा और उसके रसूलों को देना चाहिए तथा देखता है कि क्या वे उस सच्चाई पर क़ायम हैं या नहीं जो उनको दी गई।

स्मरण रहे कि जब ये पांच भूकम्प आ चुकेंगे और ख़ुदा ने जितनी तबाही का इरादा किया है वह पूरा हो चुकेगा तब ख़ुदा की दया फिर जोश मारेगी और फिर असाधारण और भयावह भूकम्पों का एक समय तक अन्त हो जाएगा और ताऊन भी देश में से जाती रहेगी जैसा कि ख़ुदा तआला ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया -

يا تى عَلٰى جَهَنَّم زَما نٌ لَيۡسَ فيها اَحَدٌ

अर्थात् इस नर्क पर जो ताऊन और भूकम्पों का नर्क है एक दिन ऐसा समय आएगा कि इस नर्क में मनुष्य भी नहीं होगा। अर्थात् इस देश में और जैसा कि नूह के समय में हुआ कि एक बहुत सी सृष्टि की मौत के बाद अमन का युग प्रदान किया गया ऐसा ही यह भी होगा। और फिर इस इल्हाम के बाद अल्लाह तआला फ़रमाता है -

ثُمَّ يُغَاثُ النَّاسُ و يعصرون

अर्थात् फिर लोगों की दुआएं सुनी जाएंगी और समय पर वर्षाएं होंगी तथा बाग़ और खेत बहुत फल देंगे और खुशी का युग आ जाएगा तथा असाधारण आपदाएं दूर हो जाएंगी ताकि लोग यह न समझें कि ख़ुदा केवल महा प्रकोपी है, दयालु नहीं है और ताकि उसके मसीह को अशुभ न ठहराएं।★

★**हाशिया :-** मसीह मौऊद के लिए प्रारंभ से यही निर्धारित है कि पहले तो वह प्रकोपी रूप में प्रकट होगा और जहां तक उसकी नज़र काम करती है उस की

स्मरण रहे कि मसीह मौऊद के समय में मौतों की प्रचुरता आवश्यक थी और भूकम्पों तथा ताऊन का आना एक निर्धारित बात थी। यही मायने उस हदीस के हैं कि जो लिखा है कि मसीह मौऊद की फूंक से लोग मरेंगे और जहां तक मसीह की नज़र जाएगी उसका क़त्ल करने वाली फूंक प्रभाव करेगी। तो यह नहीं समझना चाहिए कि उस हदीस में मसीह मौऊद को एक डाइन ठहराया गया है जो नज़र के साथ प्रत्येक का कलेजा निकाल लेगी अपितु हदीस के मायने यह हैं कि उसकी पवित्र सुगन्धों अर्थात् उसके कथन पृथ्वी पर जहां तक प्रकाशित होंगे तो चूंकि लोग उनका इन्कार करेंगे, और झुठलाएंगे तथा गालियां देंगे, इसलिए वह इन्कार अज़ाब का कारण हो जाएगा।★ यह हदीस बता रही है कि मसीह मौऊद का कठोरता

शेष हाशिया- फूंक से लोग मरेंगे अर्थात् वह युग जिहाद और तलवार से लड़ने का युग नहीं होगा केवल मसीह मौऊद का रूहानी ध्यान तलवार का काम दिखाएगा और आकाश से प्रकोपी निशान प्रकट होंगे। जैसे ताऊन और भूकम्प इत्यादि आपदाएं। तब इसके बाद ख़ुदा का मसीह मानव जाति को दया-दृष्टि से देखेगा और आकाश से दया के लक्षण प्रकट होंगे तथा उम्रों में बरकत दी जाएगी पृथ्वी में से जीविका का सामान प्रचुर मात्रा में पैदा होगा। (इसी से)

★हाशिया :- इस हदीस से भी सिद्ध है कि मसीह के समय में जिहाद का आदेश निरस्त कर दिया जाएगा जैसा कि सही बुख़ारी में भी मसीह मौऊद कि विशेषताओं में लिखा है يضع الحرب अर्थात् मसीह मौऊद जब आएगा तो युद्ध और जिहाद को स्थगित कर देगा। इसमें हिकमत यह है कि जब मसीह के रूहानी ध्यान से प्रकोपी निशान प्रकट होंगे और लाखों लोग ताऊन और भूकम्पों इत्यादि से मरेंगे तो फिर तलवार के द्वारा किसी को क़त्ल करने की आवश्यकता नहीं रहेगी और ख़ुदा इस से अधिक दयावान है कि दो प्रकार के कठोर अज़ाब किसी क़ौम

के साथ इन्कार होगा जिसके कारण देश में संक्रामक रोग होंगे और भयंकर भूकम्प आएंगे तथा अमन जाता रहेगा अन्यथा यह अनुचित बात है कि आकारण सदाचारी और नेक चलन लोगों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के अज़ाब की क़यामत आए। यही कारण है कि पहले युगों में भी मूर्ख लोगों ने प्रत्येक नबी को अशुभ समझा है और अपना कर्म-दण्ड उन पर थोप दिया है, परन्तु असल बात यह है कि नबी अज़ाब को नहीं लाता अपितु अज़ाब का पात्र हो जाना समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए नबी को लाता है और उसके स्थापित होने के लिए आवश्यकता पैदा करता है और कठोर अज़ाब नबी के स्थापित होने के बिना आता ही नहीं। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا (बनी इस्राईल-16)

फिर यह क्या बात है कि एक ओर तो ताऊन देश को खा रही है और दूसरी ओर भयावह भूकम्प पीछा नहीं छोड़ते। हे लापरवाहो! तलाश तो करो शायद तुम में ख़ुदा की ओर से कोई नबी क़ायम हो गया है।★ जिसे तुम झुठला रहे हो। अब हिज्री सदी का भी चौबीसवां

शेष हाशिया - पर एक ही समय में उतारे। अर्थात् एक प्रकोपी निशानों का अज़ाब तथा दूसरा लोगों के द्वारा तलवार का अज़ाब। और ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट तौर पर फ़रमा दिया है कि ये दो प्रकार के अज़ाब एक समय में इकट्ठे नहीं हो सकते। (इसी से)

★**हाशिया :-** नबी के शब्द से इस युग के लिए ख़ुदा तआला का अभिप्राय यह है कि कोई व्यक्ति पूर्ण रूप से ख़ुदा के वार्तालाप और सम्बोधन का सम्मान प्राप्त करे और धर्म के नवीनीकरण के लिए मामूर हो। यह नहीं कि वह कोई दूसरी शरीअत लाए क्योंकि शरीअत आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर समाप्त

वर्ष है। ख़ुदा के किसी रसूल के स्थापित हुए बिना तुम पर यह विपदा क्यों आ गई जो प्रतिवर्ष तुम्हारे मित्रों को तुम से पृथक करती और तुम्हारे दिलों पर पृथकता का दाग़ लगाती है। अत: कुछ बात तो है क्यों तलाश नहीं करते और तुम क्यों इस उपरोक्त कथित आयत में विचार नहीं करते जो ख़ुदा तआला फ़रमाता है -

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا

अर्थात् हम किसी बस्ती पर असाधारण अज़ाब नहीं उतारते जब तक हम उन पर समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए एक रसूल न भेज दें। अब तुम स्वयं सोच कर देख लो कि क्या यह असाधारण अज़ाब नहीं जो तुम कई वर्ष से भुगत रहे हो। तुम वे संकट देख रहे हो जिन का तुम्हारे बाप-दादों ने नाम भी नहीं सुना था तथा जिनका हज़ारों वर्ष तक इस देश में उदाहरण नहीं पाया जाता और जिस ताऊन तथा जिस भूकम्प को अब तुम देखते हो मैं अपनी कश्फ़ी अवस्था में उसे पच्चीस वर्ष से देख रहा हूं। यदि ख़ुदा ने मुझे ये समस्त ख़बरें पहले से नहीं दीं तो मैं झूठा हूं परन्तु यदि ये ख़बरें पच्चीस वर्ष से मेरी पुस्तकों में दर्ज हैं और मैं समय से पूर्व निरन्तर ख़बर★देता रहा हूं तो तुम्हें डरना चाहिए। ऐसा न हो कि तुम ख़ुदा के आरोप के नीचे आ जाओ। तुम सुन चुके हो

शेष हाशिया - है और आंहज़रत सल्लल्लाहु के बाद किसी पर नबी के शब्द का चरितार्थ करना भी वैध नहीं जब तक उसको उम्मती भी न कहा जाए। जिस के मायने ये हैं कि उसने प्रत्येक इनाम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण से पाया न कि सीधे तौर पर। (इसी से)

★**हाशिया :-** इन्हीं भयंकर भूकम्पों की सूचनाएं मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया में आज से पच्चीस वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुकी हैं। (इसी से)

कि 4 अप्रैल 1905 ई. के भूकम्प की भविष्यवाणी मैंने एक वर्ष पूर्व अखबारों में प्रकाशित की थी और उसमें केवल यही शब्द नहीं था कि "ज़लज़ले का धक्का" अपितु यह इल्हाम भी था कि عَفَتِ الدِّيَارُ مَحَلُّهَا وَمقامها अर्थात् पंजाब के कुछ भागों के भवन तबाह और मिट जाएंगे। इसलिए अब मुझे इस बात के लिखने की आवश्यकता नहीं कि कितनी सफाई से वह भविष्यवाणी पूरी हो गई। तत्पश्चात् इसी अप्रैल के महीने में ख़ुदा तआला की वह्यी से यह दूसरी भविष्यवाणी मैंने प्रकाशित की थी कि जैसा कि यह भूकम्प 4 अप्रैल 1905ई. के बहार (बसन्त) के मौसम में आया, ऐसा ही एक दूसरा भूकम्प बसन्त के मौसम में ही आएगा और इस से पहले नहीं आएगा। और आवश्यक है कि 25 फरवरी 1906 ई. तक वह भूकम्प न आए। इसलिए ग्यारह महीने तक कोई भूकम्प न आया। और जब 25 फ़रवरी 1906 ई. गुज़र गई। तब 27 फ़रवरी 1906 ई. की रात को ठीक बसन्त के बीच एक बजे के लगभग एक भीषण भूकम्प आया कि अंग्रेज़ी अखबार सिविल इत्यादि को भी इक़रार करना पड़ा कि यह भूकम्प 4 अप्रैल 1905 ई. के भूकम्प के बराबर था और रामपुर शहर क्षेत्र शिमला तथा बहुत से अन्य स्थानों में प्राणों और भवनों की क्षति हुई। यह वही भूकम्प था जिसके बारे में ग्यारह महीने पूर्व ख़ुदा तआला की वह्यी ने यह खबर दी थी कि

"फिर बहार आई ख़ुदा की बात फिर पूरी हुई★ तो इसी के

★**हाशिया :-** अफ़सोस कि कुछ पक्षपाती मौलवी केवल हठधर्मी से इस खुली-खुली भविष्यवाणी पर धूल डालना चाहते हैं और लोगों को धोखा देकर यह कहते हैं कि भविष्य में आने वाले भूकम्प के बारे में तो यह लिखा गया था कि

अनुसार बहार के मौसम में भूकम्प आया। अब सोच कर देख लो कि यह ख़ुदा के अतिरिक्त किस की शक्ति है कि इस स्पष्टता के साथ भविष्यवाणी कर सके। मेरे हाथ में तो पृथ्वी की परतें नहीं थीं कि मैं ग्यारह महीने तक उनको थाम रखता और फिर 25 जनवरी 1906 ई. बाद एक ज़ोर का धक्का देकर पृथ्वी को हिला देता। अत: हे प्रियजनो जब तुम ने ये दोनों भूकम्प अपनी आंखों से देख लिए तो अब तुम्हें इस बात का समझना आसान है कि भविष्य में पांच भूकम्पों की ख़बर भी कोई गप नहीं है और तुम यह भी समझ सकते हो कि जैसा कि यह विश्वास करना मानवीय शक्ति से बाहर था कि ग्यारह माह तक अप्रैल के भूकम्प के समान कोई भूकम्प नहीं आएगा अपितु ठीक बहार में 25 फ़रवरी 1906 ई. के बाद आएगा। ऐसा ही यह विश्वास करना भी मानवीय शक्ति से बाहर है

शेष हाशिया - वह क़यामत का नमूना होगा परन्तु यह भूकम्प तो क़यामत का नमूना नहीं। इसके उत्तर में इसके अतिरिक्त क्या कहें कि झूठों पर ख़ुदा की लानत। मैं बारबार अपनी पुस्तकों और विज्ञापनों में यह भविष्यवाणी प्रकाशित कर चुका हूं कि कई भूकम्प आएंगे और एक क़यामत का नमूना होगा अर्थात् उसमें बहुत से प्राणों की क्षति होगी परन्तु एक भूकम्प बहार के दिनों में आया था और उसके बारे में इल्हाम यह था -"फिर बहार आई ख़ुदा की बात फिर पूरी हुई" अत: 28 फरवरी 1906 ई. का भूकम्प बिल्कुल बहार के मौसम में आया, जिस से आठ आदमी मर गए और 19 ज़ख़्मी हुए और सैकड़ों मकान गिर गए और भूकम्प के बारे में पैसा अखबार 16 मार्च 1906 ई. पृष्ठ-5, कालम-3 में लिखा है कि 28 फ़रवरी 1906ई. की रात के भूकम्प में गांव दोदापुर ज़िला, अम्बाला, तहसील जगाधरी के सारे लोग रात को सोए हुए मर गए केवल तीन आदमी बचे और ज़िला सहारनपुर में भूकम्प की रात को एक सूखा कुआं पानी से भर गया। (इसी से)

कि अब इस के बाद पांच भीषण भूकम्प आएंगे जिनके द्वारा ख़ुदा तआला अपने चेहरे की चमकार दिखाएगा यहां तक कि उनको जो ख़ुदा तआला के अस्तित्व के क़ाइल नहीं इक़रार की ओर खींचेगा, तत्पश्चात् अमन हो जाएगा और एक अवधि तक ऐसे भूकम्प फिर कभी नही आएंगे। आप लोग समझ सकते हैं कि भूगर्भ-शास्त्र का कोई ज्ञान इस व्याख्या और विवरण को बता नहीं सकता अपितु वह ख़ुदा जो पृथ्वी और आकाश का ख़ुदा है वह अपने विशेष रसूलों को ये रहस्य बताता है न कि प्रत्येक को, ताकि संसार के लोग कुफ़्र और इन्कार से बच जाएं और ताकि वे ईमान लाएं और नर्क के अज़ाब से मुक्ति पाएं। तो देखो मैं पृथ्वी और आकाश को गवाह करता हूं कि आज मैंने वह भविष्यवाणी जो पांच भूकम्पों के बारे में है स्पष्टतापूर्वक वर्णन कर दी है ताकि तुम पर प्रमाण हो और ताकि तुम्हारी गुमराही पर मौत न हो। हे अज़ीज़ो! ख़ुदा से मत लड़ो कि इस लड़ाई में तुम कदापि विजयी नहीं हो सकते। ख़ुदा किसी क़ौम पर ऐसे अज़ाब नहीं उतारता और न कभी उसने किए जब तक उस क़ौम में उसकी ओर से कोई रसूल न आया हो। अर्थात् जब तक उसका भेजा हुआ उनमें प्रकट न हुआ हो। इसिलए तुम ख़ुदा के अनादि कानून से फ़ायदा उठाओ और तलाश करो कि वह कौन है जिसके लिए तुम्हारी आंखों के सामने आकाश पर रमज़ान के महीने में चन्द्र और सूर्य-ग्रहण हुआ और पृथ्वी पर ताऊन फैली तथा भूकम्प आए और समय से पूर्व भविष्यवाणियां किस ने सुनाईं और किसने यह दावा किया कि मैं मसीह मौऊद हूं उस व्यक्ति को तलाश करो कि वह तुम में मौजूद है और वह यही

है जो बोल रहा है-

وَلَا تَايْـــَٔــسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰہِ اِنَّہٗ لَا يَايْــــَٔــسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰہِ اِلَّا الْقَــوْمُ الْكٰفِــرُوْنَ (यूसुफ़-88)

मैंने यहां तक निबंध को समाप्त किया था कि आज फिर 15 मार्च 1906 ई. को दिन वीरवार सुबह के समय यह इल्हाम हुआ - **<u>ख़ुदा निकलने को है</u>** انــت مــنی بمنــزلة بــروزی ۔ وعــداللّٰہ انّ وعــد اللّٰہ لا یبــدّل अर्थात् ख़ुदा इन पांच भूकम्पों को लाने से अपना चेहरा प्रकट करेगा और अपने अस्तित्व को दिखा देगा और तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मैं ही प्रकट हो गया अर्थात् तेरा प्रकटन बिल्कुल मेरा ही प्रकटन होगा। यह ख़ुदा का वादा है कि पांच भूकम्पों के साथ ख़ुदा स्वयं को प्रकट करेगा और ख़ुदा स्वयं को प्रकट करेगा और ख़ुदा का वादा नहीं टलेगा तथा अवश्य हो कर रहेगा।

स्मरण रहे कि भविष्यवाणी दो प्रकार की होती है। एक केवल अजाब के वादे की जिस से दण्ड देना होता है और ऐसी भविष्यवाणी यदि ख़ुदा तआला की ओर से हो तो किसी के डरने, तौब:, क्षमा याचना या दान और दुआ से टल सकती है जैसा कि यूनुस नबी की भविष्यवाणी टल गई और प्रकटन में नहीं आई। क्योंकि यूनुस नबी को अज़ाब के वादे के तौर पर बताया गया था कि तेरी क़ौम पर चालीस दिन तक अज़ाब आ जाएगा और यह भविष्यवाणी अटल तौर पर बिना किसी शर्त के थी परन्तु तब भी जब यूनुस की क़ौम ने तौब: और इस्तिग़फ़ार किया और उनके दिल डर गए तो ख़ुदा तआला ने उस अज़ाब का लाना रोक दिया और वह अटल भविष्यवाणी टल गई

जिसके कारण यूनुस नबी को बड़े संकट का सामना हुआ और उस ने चाहा कि झूठा कहला कर फिर अपनी कौम को मुंह दिखाए। इस प्रकार अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी का तौब: इस्तिग़फ़ार या दान से टल जाना एक ऐसा नितान्त स्पष्ट मामला है कि किसी क़ौम या समुदाय को इस से इन्कार नहीं। क्योंकि समस्त नबियों की सहमति से यह बात मान्य है कि तौब:, क्षमा-याचना और दान-पुण्य से बला रद्द हो सकती है अब स्पष्ट है कि जिस बला (विपदा) को ख़ुदा ने किसी पर डालना चाहा है यदि नबी को समय से पूर्व उस विपदा का ज्ञान दिया जाए तो केवल ख़ुदा तआला का गुप्त इरादा होगा और यहां इन मूर्ख मौलवियों का कितना छिद्रान्वेषण होता है कि मुझ पर ऐतराज़ करके कहते हैं कि डिप्टी अब्दुल्लाह आथम पन्द्रह महीने की मीआद में नहीं मरा अपितु कुछ माह बाद मरा। नहीं जानते कि वह अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी थी और इसके बावजूद यूनुस की भविष्यवाणी की तरह केवल अटल न थी अपितु उसके साथ ये शब्द थे कि बशर्ते कि सच्चाई की ओर रुजू न करे। अर्थात् इस हालत में पन्द्रह महीने के अन्दर मरेगा कि जब उसके दिल ने सच्चाई की ओर रुजू न किया हो। परन्तु यह बात ईसाइयों की गवाही से भी प्रमाणित है कि उसने उसी मज्लिस में जब यह भविष्यवाणी सुनाई गई थी सच्चाई की ओर रुजू कर लिया था और डर गया था। क्योंकि जब मैंने मुबाहस: का सिलसिला समाप्त होने के बाद साठ या सत्तर गवाहों के सामने जिसमें से कुछ मुसलमान और कुछ ईसाई थे, डाक्टर मार्टिन क्लार्क की कोठी पर बुलन्द आवाज़ से कहा कि आप ने अपनी अमुक पुस्तक में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम

दज्जाल रखा है इसलिए ख़ुदा ने इरादा किया है कि वह पन्द्रह महीने के अन्दर आप को मार देगा बशर्ते कि सच्चाई की ओर रुजू न करो। तब वह इस भविष्यवाणी को सुनते ही डर गया और उसका रंग ज़र्द हो गया और उसने अपनी जीभ बाहर निकाली और दोनों हाथ अपने कानों पर रखे तथा उसका शरीर भय से कांप उठा और तौब: करने वाले का रूप बना कर कहा कि मैंने आंहज़रत को कदापि दज्जाल नहीं कहा। मेरे विचार से उस समय जल्से में तीस से अधिक ईसाई मौजूद होंगे जिन में से एक डाक्टर मार्टिन क्लार्क भी थे जो अब तक जीवित मौजूद हैं। यदि उन से क़सम लेकर पूछा जाए तो मैं आशा नहीं रखता कि वह घटना के विरुद्ध वर्णन कर सकें या उस घटना को छुपा सकें। फिर इसके बावजूद यह बात भी प्रमाणित है कि इस भविष्यवाणी के सुनते ही डिप्टी अब्दुल्लाह आथम के हृदय पर बहुत बेचैनी और व्याकुलता छा गयी और वह भविष्यवाणी के प्रभाव से पागलों की तरह हो गया और बहुत रोता था और इसके बाद इस्लाम धर्म के खण्डन में उस ने एक पंक्ति भी प्रकाशित न की, यहां तक कि केवल कुछ माह बाद मृत्यु पा गया। और मैंने निरन्तर विज्ञापनों से उस पर हुज्जत पूरी की तथा विज्ञापनों में लिखा कि यदि उस ने भविष्यवाणी की शर्त के अनुसार अपने हृदय में सच्चाई की ओर रुजू नहीं किया तो वह क़सम खा कर कहे तो मैं वादा करता हूं कि मैं चार हज़ार रुपया उस क़सम के बाद अविलम्ब उसको दूंगा। परन्तु ईसाइयों के आग्रह के बावजूद (कि क़सम खाले) उसने क़सम न खाई और इस प्रकार टाल दिया कि हमारे धर्म में क़सम खाना मना है। हालांकि इंजील से सिद्ध है कि पतरस ने क़मस खाई, पोलूस ने

क़सम खाई और स्वयं हज़रत मसीह ने क़सम खाई फिर मना क्योंकर हो गई और अब तक अदालतों में ईसाई गवाहों को क़सम दी जाती है अपितु दूसरों के लिए इक़रार-ए-सालिह और ईसाइयों के लिए विशेष तौर पर क़सम है। अत: इस हीले-बहाने के बावजूद फिर मौत से बच न सके। और जैसा कि मैंने विज्ञापनों में प्रकाशित किया था मेरे अन्तिम विज्ञापन से कुछ महीने बाद मर गया और मौत का रोग तो उन्हीं दिनों में आरंभ हो गया था।

ये हैं हमारे विरोधी मौलवियों के ऐतराज़ जिन्होंने क़ुर्आन और हदीस का ज्ञान पढ़ कर डुबो दिया अब तक उन्हें मालूम नहीं कि अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी और वादे की भविष्यवाणी में अन्तर क्या है? और अब तक यूनुस नबी के किस्से से भी अपरिचित हैं जो दुर्रेमन्सूर में भी विस्तारपूर्वक दर्ज है। चूंकि इनकी नीयतें ठीक नहीं इसलिए ऐतराज़ के समय उनको वे भविष्यवाणियां याद नहीं रहतीं जो दस हज़ार से भी अधिक मुझ से घटित हो चुकीं हैं और जैसा कि ख़ुदा ने फ़रमाया था वैसा ही प्रकट हुआ और यदि कोई अज़ाब पर आधारित थी अपने समय से टल गयी हो तो उस पर शोर मचाते हैं, जिससे मालूम होता है कि इन लोगों का ख़ुदा तआला की किताबों पर ईमान ही नहीं और मुझ पर आक्रमण करने के जोश से समस्त नबियों पर आक्रमण करते हैं। ये मूर्ख नहीं जानते कि यदि डिप्टी आथम पन्द्रह महीने में नहीं मरा तो अन्तत: कुछ माह बाद मेरे जीवन में ही मर गया और भविष्यवाणी में स्पष्ट तौर पर ये शब्द थे कि झूठा सच्चे की ज़िन्दगी में मर जाएगा उसका दावा था कि ईसाई धर्म सच्चा है और मेरा दावा था कि इस्लाम सच्चा है। तो ख़ुदा ने मेरे जीवन में

उसे मार दिया और मुझे सच्चा किया। पन्द्रह महीने को बार-बार वर्णन करना तथा उन बातों की चर्चा न करना क्या यही इन मौलवियों की ईमानदारी है? नहीं सोचते कि यूनुस नबी की तो अज़ाब की अटल भविष्यवाणी थी जिस के बारे में खबर दी गई थी कि चालीस दिन तक इस क़ौम पर अज़ाब आ जाएगा, परन्तु वह अज़ाब उन पर न आया यहां तक कि यूनुस उन में से बहुत से लोगों के जीवन में ही मृत्यु पा गया। हाय अफ़सोस! यदि इन लोगों की नीयत ठीक होती तो आथम की घटना के बाद जो लेखराम के बारे में भविष्यवाणी की गई थी जिसके साथ कोई भी शर्त न थी और जिसमें स्पष्ट तौर पर समय और मौत का प्रकार बताया गया था उसी पर विचार करते कि कैसी सफाई से वह पूरी हुई परन्तु कौन विचार करे जब पक्षपात से दिल अंधे हो गए और दिलों में एक कण इन्साफ़ होता तो एक अत्यन्त सरल तरीक़ा उन कि लिए उपलब्ध था कि जिन भविष्यवाणियों के पूरा न होने पर उनको ऐतराज़ है वह लिखकर मेरे सामने प्रस्तुत करते कि वे कितनी हैं और फिर मुझ से इस बात का सबूत लेते कि वे भविष्यवाणियां जो पूरी हो गईं वे कितनी हैं तो इस परीक्षा से उनके समस्त पर्दे खुल जाते और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि ऐतराज़ का स्थान उनके पास केवल एक दो अज़ाब के वादे की भविष्यवाणियां हैं जिन के साथ शर्त भी थी, जिन में भय और डरने के कारण विलम्ब हो गया और जिन के बारे में ख़ुदा तआला का अनादि कानून है कि वे क्षमा-याचना, दान और दुआ से टल सकती हैं। परन्तु उन के मुकाबले पर वे भविष्यवाणियां पूरी हुईं जो दस हज़ार से भी अधिक हैं जिनकी सच्चाई के लिए कई लाख लोग

गवाह हैं और केवल एक फ़िर्क़ा नहीं अपितु समस्त फ़िर्क़े। क्या मुसलमान और क्या हिन्दू और क्या ईसाई उनकी सच्चाई की गवाही देने के लिए विवश हैं। तो क्या यह ईमानदारी थी कि भविष्यवाणी की एक बड़ी फौज को जिन की सच्चाई पर लाखों लोग गवाह हैं न होने जैसा समझ कर उन से कुछ लाभ न उठाना और अज़ाब के वादे की एक दो भविष्यवाणियों को जो ख़ुदा के अनादि कानून के अनुसार विलम्ब में पड़ गईं बार-बार प्रस्तुत करना यदि यही हाल है तो किसी नबी की नुबुव्वत क़ायम नहीं रह सकती, क्योंकि इन घटनाओं का प्रत्येक नुबुव्वत में नमूना मौजूद है। इसलिए मैं कहता हूं कि ये लोग धर्म और सच्चाई के दुश्मन हैं। और यदि अब भी इन लोगों की कोई जमाअत दिल को ठीक करके मेरे पास आए तो मैं अब भी इस बात के लिए उपस्थित हूं कि उनके निरर्थक और व्यर्थ सन्देहों का उत्तर दूं और उन्हें दिखाऊं कि ख़ुदा ने एक भारी फ़ौज की तरह मेरी गवाही में कितनी भविष्यवाणियां उपलब्ध कर रखी हैं कि इस प्रकार से उनकी सच्चाई प्रकट हुई है जैसा कि दिन चढ़ जाता था। ये मूर्ख मौलवी अपनी आंखें जान बूझ कर बन्द करते हैं तो करें।

सच्चाई को इन से क्या हानि? परन्तु वह समय आता है अपितु करीब है कि बहुत से फ़िरऔनी प्रकृति के लोग इन भविष्यवाणियों पर विचार करने से डूबने से बच जाएंगे। ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं आक्रमण पर आक्रमण करूंगा यहां तक कि मैं तेरी सच्चाई दिलों में बिठा दूंगा।

अत: हे मौलवियो! यदि तुम्हें ख़ुदा से लड़ने की शक्ति है तो लड़ो। मुझ से पहले एक ग़रीब इन्सान मरयम के बेटे से यहूदियों ने

क्या कुछ न किया और किस प्रकार अपने गुमान में उसे सूली दे दी। परन्तु ख़ुदा ने उसे सूली की मृत्यु से बचाया। और या तो वह युग था कि उस को केवल एक मक्कार और झूठा समझा जाता था और या वह समय आया कि दिलों में उसकी इतनी श्रेष्ठता पैदा हो गयी कि अब चालीस करोड़ इन्सान उसे ख़ुदा मानते हैं। यद्यपि उन लोगों ने कुफ़्र किया जो एक इन्सान को ख़ुदा बनाया, परन्तु यह यहूदियों का उत्तर है जिस व्यक्ति को वे लोग एक झूठे की तरह पैरों के नीचे कुचल देना चाहते थे वही यसू मरयम का बेटा इस श्रेष्ठता को पहुंचा कि अब चालीस करोड़ इन्सान उसे सज्दा करते हैं। और बादशाहों की गर्दनें उस के नाम के आगे झुकती हैं। इसलिए यद्यपि मैंने यह दुआ की है कि यसू बिन मरयम की तरह शिर्क की उन्नति का मैं माध्यम न ठहराया जाऊं। और मैं विश्वास रखता हूं कि ख़ुदा तआला ऐसा ही करेगा। परन्तु ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार सूचना दी है कि वह मुझे बहुत श्रेष्ठता देगा और मेरा प्रेम हृदयों में बिठाएगा। और मेरे सिलसिले को समस्त पृथ्वी पर फैला देगा और सब फ़िर्क़ों पर मेरे फ़िर्क़े को विजयी करेगा तथा मेरे फ़िर्क़े के लोग ज्ञान और मारिफ़त में इतना कमाल प्राप्त करेंगे कि अपनी सच्चाई के प्रकाश, अपने तर्कों और निशानों की दृष्टि से सब का मुंह बन्द कर देंगे और प्रत्येक क़ौम इस झरने से पानी पिएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फैलेगा यहां तक कि पृथ्वी पर छा जाएगा। बहुत सी रोकें पैदा होंगी और विपत्तियां आएंगी परन्तु ख़ुदा तआला सब को मध्य से उठा देगा और अपने वादे को पूरा करेगा। ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूंगा, यहां तक कि बादशाह

तेरे कपड़ों से बरकत ढूढेंगे।★

अतः हे सुनने वालो! इन बातों को स्मरण रखो और इन भविष्यवाणियों को अपने सन्दूकों में सुरक्षित रख लो कि यह ख़ुदा का काम है जो एक दिन पूरा होगा मैं अपने नफ़्स में कोई नेकी नहीं देखता और मैंने वह कलाम नहीं किया जो मुझे करना चाहिए था। और मैं अपने आप को केवल एक अयोग्य मज़्दूर समझता हूं। यह केवल ख़ुदा की कृपा है जो मेरे साथ हुई। अतः उस सामर्थ्यवान और कृपालु ख़ुदा का हज़ार-हज़ार धन्यवाद है कि इस मुट्ठी भर धूल को उन समस्त गुणहीनताओं के बावजूद उसने स्वीकार किया-

عجب درام از لطفت اے کردگار + پزیر رفتہ چوں من خاکسار
پسندید گانے بجائے رسند + زماکتہرانت چہ آمد پسند
چو از قطرۂ خلق پیدا کنی
ہمیں عادت اینجا ہویدا کنی

यह बात लिखने से रह गई कि उपरोक्त कथित इल्हाम में जो ये शब्द हैं انّ وَعْـدَ اللہ لَا یُبـدّل अर्थात् ख़ुदा का वादा टल नहीं सकता। यह इस बात की ओर संकेत है कि पांच भूकम्पों का आना ख़ुदा तआला का एक वादा है जो अवश्य होकर रहेगा। हां जो व्यक्ति तौबः, क्षमा-याचना करेगा और अभी से ख़ुदा तआला से सुलह करेगा और उसमें उद्दण्डता की कोई आग शेष नहीं रहेगी ख़ुदा उस पर दया करेगा, परन्तु उस पर दया करने से यह परिणाम नहीं निकलता कि

★**हाशिया :-** कश्फ़ की अवस्था में मुझे वे बादशाह दिखलाए गए जो घोड़ों पर सवार थे और कहा गया कि ये हैं जो अपनी गर्दनों पर तेरी आज्ञापालन का जुआ उठाएंगे और ख़ुदा इन्हें बरकत देगा। (इसी से)

ये पांच भूकम्प नहीं आएंगे। वे तो अवश्य आएंगे परन्तु ऐसा व्यक्ति उन के आघात से बच जाएगा। यह ख़ुदा तआला का वादा है वह अपने वादे को भंग नहीं करता। उस की वईद टल सकता है परन्तु वादा नहीं टल सकता। जैसा कि हम अभी पहले वर्णन कर चुके हैं।

यहां एक और बात उल्लेखनीय है कि यहां स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न पैदा होता है कि जब इस से पहले सैकड़ों निशान मेरे सत्यापन के लिए खुले-खुले प्रकट हो चुके थे और हज़ारों तक नौबत पहुंच गई थी तो फिर इस घातक ताऊन और इन तबाही फैलाने वाले भूकम्पों की क्या आवश्यकता थी। क्या वे सैकड़ों निशान पर्याप्त न थे?

इस प्रश्न का उत्तर दो प्रकार से है -

प्रथम - यह कि मानव-प्रकृति में यह सम्मिलित है कि वह दया के निशानों से बहुत की कम लाभ उठाता है और ऐसा ही पक्षपात् के कारण दूसरी प्रकार के छोटे-छोटे निशानों से टालने के लिए कोई न कोई बहाना निकालता है ताकि किसी प्रकार स्वीकार की दौलत से वंचित रहे। तो यहां भी ऐसा ही हुआ कि हज़ारों निशानों के प्रकट होने के बावजूद क़ौम के दिलों पर एक कण प्रभाव न पड़ा। यदि आप मेरी पुस्तक 'नुज़ूलुलमसीह' को देखें तो आप को ज्ञात होगा कि ख़ुदा ने निशानों के दिखाने में कोई अन्तर नहीं किया। दोस्तों के लिए भी निशान प्रकट हुए और दुश्मनों की चेतावनी के लिए भी और मेरे अपने बारे में भी और ऐसा ही मेरी सन्तान के बारे में भी निशान प्रकटन में आए और जिस प्रकार पृथ्वी का एक बड़ा भाग समुद्र से भरा हुआ है ऐसा ही यह सिलसिला ख़ुदा के निशानों से भर गया।

कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें कोई न कोई निशान प्रकट न हो और प्रत्येक भविष्यवाणी किसी न किसी निशान पर आधारित होती है। मैंने इस पुस्तक में दस हज़ार निशानों का केवल नमूने के तौर पर वर्णन किया है अन्यथा यदि वे सब लिखे जाएं तो वह पुस्तक जिस में वे लिखे जाएं हज़ार भाग से भी अधिक हो जाएगी। क्या ग़ैब का इतना निरन्तर प्रकट होना किसी झूठ गढ़ने वाले के कारोबार में संभव है? मेरे मूर्ख विरोधियों को ख़ुदा प्रतिदिन नाना प्रकार के निशान दिखाने से अपमानित करता जाता है और मैं उसी की क़सम खा कर कहता हूं कि जैसा कि उसने इब्राहीम[अ.] से वार्तालाप और संवाद किया और फिर इस्हाक़[अ.] से, इस्माईल[अ.] से, याक़ूब[अ.] से, मूसा[अ.] से और मसीह इब्ने मरयम से और सब के बाद हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऐसा परस्पर वार्तालाप किया कि आप[स.] पर सबसे अधिक रोशन और पवित्र वह्यी उतारी। ऐसा ही उस ने मुझे भी अपने वार्तालाप और सम्बोधन का सम्मान प्रदान किया। परन्तु यह सम्मान मुझे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण से प्राप्त हुआ यदि मैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत न होता और आप का अनुकरण न करता तो दुनिया के समस्त पहाड़ों के बराबर मेरे आमाल (कर्म) होते तो फिर भी मैं कभी यह वार्तालाप और सम्बोधन का सम्मान कदापि न पाता। क्योंकि अब मुहम्मदी नुबुव्वत के अतिरिक्त सब नुबुव्वतें बन्द हैं। शरीअतवाला नबी कोई नहीं आ सकता बिना शरीअत वाला नबी हो सकता है परन्तु वही जो पहले उम्मती हो। तो इसी आधार पर मैं उम्मती भी हूं और नबी भी। और मेरी नुबुव्वत अर्थात् ख़ुदाई वार्तालाप संबोधन आंहज़रत

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत का एक ज़िल्ल (प्रतिबिम्ब) है और इसके अतरिक्त मेरी नुबुव्वत कुछ भी नहीं। वही नुबुव्वत-ए-मुहम्मदिया है जो मुझ में प्रकट हुई है। और चूंकि मैं केवल ज़िल्ल हूं और उम्मती हूं इसलिए आंजनाब[स.] का इस से कुछ अपमान नहीं। और यह ख़ुदा का संवाद और वार्तालाप जो मुझ से होता है यक़ीनी है। यदि मैं एक पल के लिए भी इसमें सन्देह करूं तो काफ़िर हो जाऊं और मेरी आख़िरत तबाह हो जाए। वह कलाम जो मुझ पर उतरा निश्चित और अटल है, और जैसा कि सूर्य और उसके प्रकाश को देखकर कोई सन्देह नहीं कर सकता कि यह सूर्य और यह उसका प्रकाश है। ऐसा ही मैं उस कलाम में भी सन्देह नहीं कर सकता कि यह सूर्य और यह उसका प्रकाश है। ऐसा ही मैं उस कलमा में भी सन्देह नहीं कर सकता जो ख़ुदा तआला की ओर से मुझ पर उतरता है और मैं उस पर ऐसा ही ईमान लाता हूं जैसा कि ख़ुदा की किताब पर। यह तो संभव है कि ख़ुदा के कलाम के अर्थ करने में कुछ अवसरों में एक समय तक मुझ से कोई ग़लती हो जाए परन्तु यह संभव नहीं कि मैं सन्देह करूं कि वह ख़ुदा का कलाम नहीं। और चूंकि मेरे नज़दीक नबी उसको कहते हैं जिस पर ख़ुदा का कलाम यक़ीनी और अटल बड़ी प्रचुरता से उतरे जो ग़ैब पर आधारित हो। इसलिए ख़ुदा ने मेरा नाम नबी रखा परन्तु बिना शरीअत के। शरीअत का ग्रहण करने वाला क़यामत तक पवित्र क़ुर्आन है। तो वह ख़ुदा का कलाम जो मुझ पर उतरता है अपने अन्दर एक विलक्षण हालत रखता है और अपनी प्रकाशमान किरणों से अपना चेहरा दिखलाता है वह फ़ौलादी मेख़ (कील) की तरह दिल के अन्दर धंस जाता है

और अपनी रूहानी शक्तियों के साथ मुझे भर देता है। वह रुचिकर, सरस और आरामदायक है और अपने अन्दर एक ख़ुदाई रोब रखता है और ग़ैब के वर्णन करने में कंजूस नहीं अपितु ग़ैब की नहरें उसमें चल रही हैं, परन्तु हमारे कुछ विरोधी जो इल्हाम का दावा करते हैं प्रथम तो ये ग़ैबी मौजें और ख़ुदा के भेदों का एक दरिया उनके इल्हामों में नहीं तथा ख़ुदाई शक्ति और वैभव उनको छू भी नहीं गया। इसके अतिरिक्त वे स्वयं इस बात को मानते हैं कि उन्हें मालूम नहीं कि यह इल्हाम उनके रहमानी हैं या शैतानी हैं इसी कारण से उन की सामान्य आस्था है कि उनके इल्हाम काल्पनिक बातों में से हैं। नहीं कह सकते कि ऐसे इल्क़ा ख़ुदा से हैं या शैतान से ऐसे इल्हामों पर गर्व करना शर्म का स्थान हैं जिन में इतनी भी चमक नहीं जिस से पता लग सके कि वे अवश्य ख़ुदा की ओर से हैं न कि शैतान की ओर से। ख़ुदा पवित्र है और शैतान अपवित्र है। अत: ये विचित्र इल्हाम हैं कि इन से कुछ मालूम नहीं होता कि ये पवित्र झरने से निकले हैं या अपवित्र झरने से। और दूसरा संकट यह है कि यदि कोई किसी इल्हाम को ख़ुदा का इल्हाम समझ कर उस पर पाबन्द हुआ और वास्तव में वह शैतान का इल्हाम हो तो वह तो तबाह हो गया और यदि शैतान का इल्हाम समझ कर ख़ुदा के इल्हाम पर पाबन्द न हुआ तो वह भी तबाही के गढ़े में गिरा तो ये इल्हाम क्या हुए? एक भयानक संकट हुआ। जिसका अंजाम मौत है और यह इस्लाम पर भी एक दाग़ है बनी इस्राईल में तो ऐसे यक़ीनी इल्हाम होते थे जिन के कारण हज़रत मूसा[अ.] की मां ने अपने मासूम बच्चे को दरिया में डाल दिया और उस इल्हाम की सच्चाई में कुछ सन्देह

न किया और काल्पनिक न समझा। ख़िज़्र ने एक बच्चे को क़त्ल भी कर दिया, परन्तु इस दयनीय उम्मत को वह श्रेणी भी न मिली जो बनी इस्राईल की स्त्रियों को मिल गई। फिर इस आयत के क्या मायने हुए कि صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (अलफ़ातिहा) क्या इन्हीं काल्पनिक इल्हामों का नाम इनाम है जो शैतान और रहमान में शामिल हैं। शर्म का स्थान।

उपरोक्त कथित प्रश्न का दूसरा उत्तर यह है कि छोटी-छोटी घटनाओं की भविष्यवाणियां यद्यपि ख़ुदा के मुर्सलों की सच्चाई की वे भी एक पर्याप्त प्रमाण हैं क्योंकि मात्रा और गुणवत्ता की दृष्टि से उन भविष्यवाणियों में भी दूसरे लोग उन का मक़ाबला नहीं कर सकते, इसके बावजूद जिन लोगों पर वसवस: और भ्रम विजयी है वे किसी न किसी भ्रम में गिरफ़्तार हो जाते हैं। उदाहरणतया यदि ख़ुदा के किसी मामूर की दुआ से किसी के घर में लड़का पैदा हो या वह मामूर लड़का पैदा होने की ख़बर दे और लड़का हो जाए तो बहुत से लोग कह उठते हैं कि यह कोई विशेष निशान नहीं। बहुत सी औरतों को भी अपने बारे में या पड़ोसी औरत के बारे में स्वप्न आ जाते हैं कि उसके घर में लड़का पैदा होगा, तो फिर लड़का भी पैदा हो जाता है तो क्या उस औरत को ख़ुदा का नबी या रसूल या मुहद्दिस मान लिया जाए? और यद्यपि ऐसे भ्रमों में ये लोग झूठे हैं परन्तु अशिष्टों की ज़ुबान कौन बन्द करे? और झूठे इसलिए हैं कि हम यह तो नहीं कहते कि किसी एक कथन और एक-दो घटना से किसी का ख़ुदा की ओर से होना सिद्ध हो जाता है ताकि प्रत्येक स्वप्न देखने वाला ख़ुदा का मनोनीत समझा जाए अपितु

पहले दावा चाहिए फिर ऐसी भविष्यवाणियां चाहिएं जो अपनी-अपनी मात्रा और गुणवत्ता की दृष्टि से उस सीमा तक पहुंच चुकी हों कि जो सामान्य लोगों के स्वप्नों या इल्हामों की भागीदारी उनके साथ वर्जित हो जैसा कि ऐसी भविष्यवाणियां छोटी-छोटी घटनाओं के बारे में जो मेरे द्वारा ख़ुदा ने पूरी कीं उन की संख्या कई हज़ार तक पहुंचती है और कौन है जिसने संख्या और सफ़ाई की दृष्टि से उनका मुकाबला करके दिखाया। कुछ वर्ष हुए कि एक अभागे अनाड़ी ने ऐतराज़ किया था कि मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब जो इतनी निष्कपटता रखते हैं उनके लड़के का निधन हो गया है। यह ऐतराज़ यद्यपि सर्वथा द्वेष और मूर्खता के कारण था क्योंकि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग्यारह लड़के मृत्यु प्राप्त हुए थे परन्तु मेरी दुआ पर ख़ुदा ने मुझ पर प्रकट किया कि मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब के घर में लड़का पैदा होगा और उसके शरीर पर फोड़े प्रकट हो जाएंगे ताकि इस बात का निशान हो कि यह वही लड़का है जो दुआ के द्वारा पैदा हुआ। तो ऐसा ही घटित हुआ और थोड़े ही दिनों के बाद मौलवी साहिब के घर में लड़का पैदा हुआ जिसका नाम अब्दुलहयी रखा गया और उस के जन्म के समय के क़रीब ही उसके शरीर पर बहुत से फोड़े निकल आए जिन के दाग़ अब तक मौजूद हैं। ये फोड़े ख़ुदा ने इसलिए उसके शरीर पर पैदा किए ताकि किसी को यह भ्रम न हो कि यह मामला संयोग से है दुआ का प्रभाव नहीं और और न इसको भविष्यवाणी पर ठोस तर्क है जैसा कि कभी ऐसा संयोग हो जाता है कि कुछ लोग एक किसी ऐसे ग़ायब दोस्त की चर्चा करते हैं कि वह इस समय

आते तो अच्छा था और अभी वह चर्चा आरंभ ही होती है कि वह स्वयं ही आ जाते हैं। तब लोग कहते हैं आइए साहिब अभी हम आप की चर्चा ही कर रहे थे कि आप आ ही गए। अतः ख़ुदा ने इस भविष्यवाणी के साथ फोड़ों का निशान बता दिया ताकि मालूम हो कि वह लड़का दुआ के प्रभाव से पैदा हुआ है न कि संयोग से। ऐसे ही मेरे पास हज़ारों नमूने हैं परन्तु अफ़सोस मैं इस संक्षिप्त पुस्तक में उनका वर्णन नहीं कर सकता।

जैसा कि मैं अभी वर्णन कर चुका हूं छोटी-छोटी घटनाओं की भविष्यवाणियां जबकि उन की संख्या हज़ारों तक पहुंच जाए तो इस बात का ठोस तर्क ठहरती हैं कि जिस व्यक्ति के हाथ पर वे भविष्यवाणियां प्रकट हुई हैं और जो ख़ुदा की ओर से होने का दावा करता है वह वास्तव में ख़ुदा की ओर से है परन्तु जिन के दिलों में सन्देह और भ्रम का रोग है वे फिर भी सन्देहों से नहीं रुकते और तुरन्त कह देते हैं कि अमुक फ़क़ीर ने भी तो ऐसा ही चमत्कार दिखाया था और अमुक ज्योतिषी साहिब ने भी कुछ ऐसा ही कहा था जो सच-सच निकला। और इस प्रकार से न वे केवल स्वयं गुमराह होते हैं अपितु लोगों को भी गुमराह करते हैं और ये नादान लोग आंख तो रखते हैं परन्तु वह आंख प्रत्येक कोने को देख नहीं सकती। और दिल तो रखते हैं परन्तु वह दिल प्रत्येक पहलू को सोच नहीं सकता। हमने कब और किस समय कहा कि हमारे अतिरिक्त अन्य किसी को कोई स्वप्न नहीं आता और न कोई इल्हाम होता है। अपितु हमारा अनुभव तो यहां तक है कि कभी एक को भी जिसका दिन-रात व्यभिचार ही पेशा है सच्चे स्वप्न आ सकते हैं।

एक चोर भी जिसका पेशा पराए माल की चोरी है स्वप्न के द्वारा किसी सच्ची घटना पर सूचना पा सकता है। हमारा दावा जिसको हम बार-बार लोगों के सामने प्रस्तुत करते हैं वह यह है कि ऐसे स्वप्न तथा ऐसे इल्हाम जो मात्रा और गुणवत्ता की दृष्टि से उनकी नौबत हज़ारों तक पहुंच गई हो और कोई उनका मुकाबला न कर सकता हो यह श्रेणी केवल उन लोगों को मिलती है जिन को ख़ुदा की कृपा ने विशेष तौर पर अपना मनोनीत कर लिया है अन्य को कदापि नहीं मिलती। और यह कि अन्य को न होने के तौर पर कोई सच्चे स्वप्न आते हैं या इल्हाम होता है। यह भी ख़ुदा तआला की ओर से मानव-जाति की भलाई के लिए है। क्योंकि यदि वह्यी और इल्हाम का अन्य लोगों पर दरवाज़ा सर्वथा बन्द रहता तो ख़ुदा के रसूलों पर पूर्ण रूप से विश्वास करना उनके लिए कठिन हो जाता और वे कदापि न समझ सकते कि वास्तव में इन नबियों पर वह्यी उतरती है या धोखा है या केवल भ्रमों में ग्रस्त हैं। क्योंकि मनुष्य की यह आदत है कि जिस बात का उसको नमूना नहीं दिया जाता वह पूर्ण रूप से उस बात को समझ नहीं सकता। और अन्त में कुधारणा पैदा है जाती है यही कारण है कि यूरोप और अमरीका की मदिरापान करने वाली क़ौमें जिन के मस्तिष्क मदिरापान के कारण खराब हो जाते हैं प्राय: सच्चे स्वप्न के अस्तित्व से भी इन्कारी हैं। क्योंकि अपने पास नमूने नहीं रखते। अत: इसी हित से कोई सच्चा स्वप्न तथा कोई सच्चा इल्हाम नमूने के तौर पर लोगों को सामान्य रूप से दिया गया तो जिस समय उनमें कोई नबी प्रकट हो तो स्वीकार करने की दौलत से वंचित न रहें और अपने दिलों में समझ लें कि

यह एक निश्चित वास्तविकता है जिस से चाश्नी के तौर पर हमें भी कुछ दिया गया है अन्तर केवल इतना है कि ये साधारण लोग एक भिखारी के समान हैं जिस के पास कुछ रुपया या कुछ पैसे हैं, परन्तु ख़ुदा के रसूल और ख़ुदा के नबी वे रूहानी देश के★

★ ★ ★

★ इस पुस्तक के शेष पृष्ठ नहीं मिल सके। (प्रकाशक)